झारखण्ड सरकार

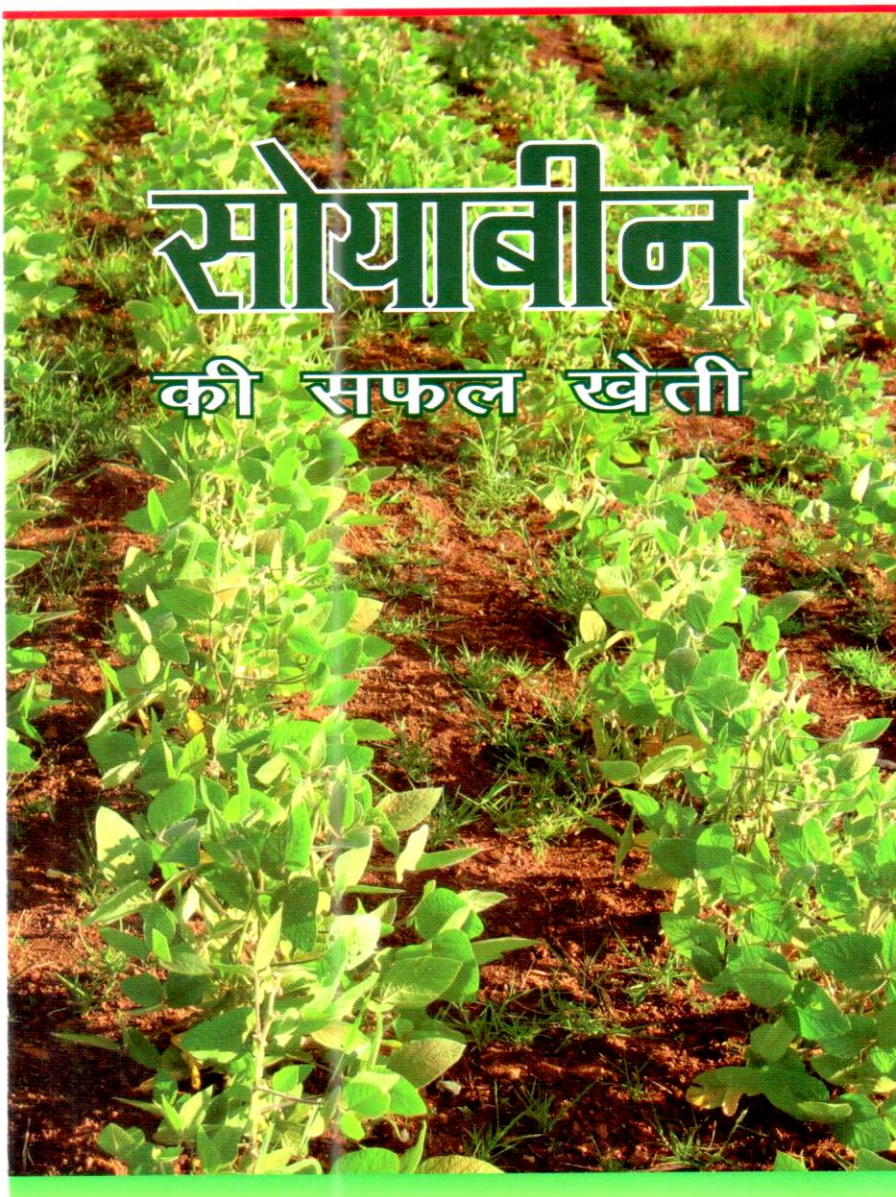

सोयाबीन

की सफल खेती

कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण

(आत्मा) रामगढ़

E-mail : atmaramgarh@gmail.com

सोयाबीन एक बहुगुणीय चमत्कारी दलहनी एवं तिलहनी फसल है। इसमें 40–45 प्रतिशत प्रोटीन तथा 18–20 प्रतिशत तेल पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें अमीनों एसिड मुख्यतः लाइसिन एवं उपयुक्त मात्रा में लवण और पौष्टिक तत्व भी होते हैं। सोयाबीन से दूध, दही तथा मक्खन भी बनाया जा सकता है। रासायनिक विश्लेषण के अनुसार इसका दूध गाय के दूध के समतुल्य होता है। इसके तेल में संतृप्त वसा अम्ल कम होने कारण इसका तेल हृदय रोगियों के लिए विशेष लाभदायक है। सोयाबीन की खेती भूमि की उर्वराशक्ति को बढ़ाती है। तेल निकालने के बाद इसकी खली में भी प्रर्याप्त मात्रा में प्रोटीन एवं खनिज तत्व रहते हैं। अतः भूमि में खाद देने और मवेशियों को खिलाने में इसका उपयोग किया जा सकता है।

झारखण्ड की टाँड़ जमीन में इसकी खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है तथा अन्य फसलों की अपेक्षा सोयाबीन की खेती कर अधिक आय प्राप्त की जा सकती है।

फसल की अच्छी पैदावार हेतु विभिन्न कृषि प्रक्रियाओं को अपनाकर खेती करना आवश्यक है। जिसका विवरण इस प्रकार है –

उन्नत किस्में

राज्य में सोयाबीन की बुआई के लिए उन्नत किस्मों का विवरण इस प्रकार से है –

1. बिरसा सोयाबीन – 1

यह किस्म 108–112 दिन में पककर 8.0–8.8 क्विंटल प्रति एकड़

की औसत उपज देती है। इस किस्म के दाने काले रंग के होते हैं। इसका पौधा बौने आकार के होते हैं और यह राइजाक्टोनिया ऐरियल ब्लाईट रोग के प्रति अवरोधी होता है।

2. जे. एस. – 80–21

यह किस्म 105 से 110 दिन में पककर 10 से 12 क्विंटल/एकड़ की औसत उपज देती है। इसके बीच हल्के पीले रंग के होते हैं तथा पौधे मध्यम आकार के होते हैं जो सर्कोस्पोरा नामक पत्ती धब्बा रोग और रस्ट के प्रति अवरोधी है।

3. जे. एस. 335

यह किस्म कम समय में (98–105 दिन) में पककर 10 से 14 क्विंटल/एकड़ की औसत उपज देती है। इसके पौधे रस्ट के प्रति अवरोधी होते है और इसके बीज हल्के पीले रंग के होते हैं।

4. पंजाब–1

यह कम समय (95–100 दिन) में पकने वाला पीला रंग का प्रभेद है, जिसकी उपज क्षमता 8–10 क्विंटल/एकड़ है। यह किस्म रस्ट के प्रति अवरोधी है।

5. ब्रैग

यह किस्म 110–115 दिन में पक कर 7.2–8.8 क्विंटल प्रति एकड़ की औसत उपज देती है। इसके बीज पीले रंग के होते हैं तथा पौधे मध्यम आकार के होते हैं। इस किस्म के पौधे सर्कोस्पोरा नामक पत्ती धब्बा रोग के प्रति अवरोधी हैं।

भूमि का चुनाव

पानी के अच्छे निकास वाली हल्की दोमट मिट्टी वाली टाँड़ जमीन जिसका पी. एच. 6.5 या अधिक हो, सोयाबीन की खेती के लिए उत्तम है। पठारी क्षेत्रों की मिट्टियाँ अम्लीय है। अतः मिट्टी की अम्लीयता दूर करने के लिए चूने का महीन चूर्ण 1.2–1.6 क्विंटल/एकड़ की दर से बुआई के समय नालियों में डालकर मिट्टी को पैर से मिला दें।

बीज दर एवं बीजोपचार

एक एकड़ भूमि की बुआई के लिए 30–32 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। बोने से पूर्व प्रति किलोग्राम बीज को 3 ग्राम

थीरम या 2 ग्राम बैविस्टीन से उपचारित कर लेना चाहिए। ऐसा करने से बीज द्वारा आनेवाली बीमारियाँ नष्ट हो जाती है। जिस खेत में सोयाबीन पहली बार बोई जा रही हो, वहाँ बीज को जीवाणु खाद (राईजोबियम कल्चर) से उपचारित करने पर अच्छी उपज होती है। जीवाणु खाद बिरसा कृषि विश्वविद्यालय से प्राप्त की जा सकती है। उपचारित करने के लिए एक लीटर पानी में 100 ग्राम गुड़ का घोल बनाकर राईजोबियम कल्चर प्रति एकड़ के हिसाब से मिलाइये। इस घोल को बीजों पर डालते हुए उस समय तक मिलाइये जब तक कि सभी बीजों पर घोल की परत एक समान न जम जाय फिर छाया में सुखाकर तत्काल बुआई करना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक

अधिक उपज प्राप्त करने के लिए बीज बोते समय प्रति एकड़ निम्नलिखित खाद का प्रयोग करें।

कम्पोस्ट : 3–4 बैलगाड़ी

यूरिया : 18 किलोग्राम

सिंगल सुपर फॉस्फेट : 200 किलोग्राम

म्यूरेट ऑफ पोटाश : 13 किलोग्राम

खाद के साथ ही 10 किलोग्राम लिण्डेन (10 प्रतिशत) की धुल भी मिला दें। ऐसा करने से खेत में दीमक आदि कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

बुआई

जहाँ सिंचाई की सुविधा हो, वहाँ सोयाबीन की बुआई 15 जून से 30 जुन तक कर दे। जहाँ सिंचाई की सुविधा उपलब्ध न हो वहाँ वर्षा प्रारंभ होते ही बुआई करनी चाहिए। कतार से कतार की दूरी 30 से 45 से.मी. रखें तथा पौधे से पौधे की दूरी 5 से 8 से.मी. रखें। बुआई के समय बीजों की गहराई 3 से 4 से.मी. रखनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

खरीफ फसलों में खरपतवारों का प्रकोप अधिक रहता है। खरपतवार से उपज पर औसतन 25 से 50 प्रतिशत तक प्रभाव पड़ता है। फसल को बुआई के 45 दिन बाद तक खरपतवार सबसे अधिक नुकसान पहुँचाते हैं। अतः इस अवधि में फसल को खरपतवार से मुक्त रखना चाहिए। इसके लिए दो निराई गुड़ाई, बुआई के 25 दिन तथा 40 दिन की अवस्था पर करें। खरपतवार

नाशी रसायन को नियंत्रित किया जा सकता है। प्रति एकड़ 800 मी. लीटर 'लासो' को 320 लीटर पानी में घोल बनाकर बुआई के तुरन्त बाद छिड़काव करें या 1.0 लीटर 'वासोलिन' नामक दवा को 320 लीटर पानी में घोलकर बुआई के पहले छिड़काव करें। खरपतवारनाशी के प्रयोग के समय मृदा में नमी का होना आवश्यक है।

सिंचाई

सोयाबीन की फसल को वैसे तो बिना सिंचाई के ही उगाया जाता है, किन्तु फूल व फलियाँ बनने के समय वर्षा न हो, तो आवश्यकतानुसार एक या दो सिंचाई देनी चाहिए।

पौधा संरक्षण

भूआ पिल्लू : भूआ पिल्लू सोयाबीन का प्रमुख शत्रु है। इसके रोकथाम के लिए निम्नलिखित उपाय करें।

(क) बुआई के 20–25 दिनों के बाद खेत में धुम घुम कर उजली पत्तियों के पीछे रहने वाले कीड़ों को चुनकर नष्ट कर दें।

(ख) सूडियाँ खेत में फैलने लगे तो डाइक्लोरोफॉस 300 मि.ली. प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

(ग) बड़े और रोयेंदार होने पर एण्डोसल्फान 400 मि.ली. या **क्लोरोपाइरिफॉस** 320 मि.ली. प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। यदि आवश्यकता हो तो 15–20 दिन बाद एक छिड़काव और करें।

जीवाणु पत्ती धब्बा रोग : जीवाणु पत्ती धब्बा रोग से रोकथाम के लिए 100 पी.पी.एम. स्ट्रेप्टोसाईक्लिन का घोल बनाकर बीमारी के लक्षण दिखाई देते ही छिड़काव कर दें। आवश्यक हो तो 15–20 दिनों बाद एक छिड़काव और करें।

कटनी एवं भंडारण

पत्तियों का रंग पीला होने पर फसल को काट देना चाहिए। कटे हुए पौधों को दो–तीन दिनों तक सुखाने के बाद डण्डे से पीटकर बीज निकाल लें। इस बात का ध्यान रहे कि बीज का छिलका न उतरे और बीज में दरार न पड़े। बीजों को 3–4 दिन अच्छी तरह सुखा कर ठंडे, सुखे तथा हवादार स्थान से भंडारण करें।

सोयाबीन के व्यंजन

(क) **सोयाबीन का दाल :** सोयाबीन के बीज को रात भर पानी से भिंगोकर छिलका छुड़ा लें। छिलका रहित दाल को धुप में सुखाकर 'दाल' के रूप में इस्तेमाल करें।

(ख) **सोयाबीन का आटा :** उपरोक्त विधि से बनायी गई दाल को आटे की चक्की में पीसकर 1:10 के अनुपात में गेहूँ के आटे में मिलाकर चपाती के रूप में इस्तेमाल करें। ये चपातियाँ स्वादिष्ट, शीघ्र पचनेवाली तथा पौष्टिक होती है। इसके आटा से पूड़ी भी तैयार की जा सकती है।

(ग) **सोयाबीन की सुजी :** दाल की मोटी दरदरी पीसकर दो या तीन साईज के छेदोंवाली चलनियों से छानकर सुजी प्राप्त की जा सकती है।

(घ) **सोयाबीन का दूध :** 100 ग्राम सोयाबीन को एक रात पहले पानी में भिंगो दें। सुबह 2 ग्राम खाने वाला सोडा गर्म पानी में मिलाकर उसमें सोयाबीन भिंगो दें। छिलका हटाकर महीन पीस लें। इसमें 1/2 कि. ग्रा. पानी मिला 4–5 बार उबालें। ठण्डा करके छान लें। दूध तैयार हो जाएगा। इस दूध से गाय के दूध के समान दही, पनीर व अन्य दूध के व्यंजन बनाये जा सकते हैं।

(ङ) **सोयाबीन की बड़ी :** 500 ग्राम सोयाबीन को एक रात पहले पानी में भिंगोकर पीस लें। स्वादानुसार नमक, मिर्च पाउडर, हींग व अजवाइन मिलाकर बड़ियाँ बनाये व धूप में अच्छी तरह सुखाकर रखें।

837_(01-20) Annapurna Press 0651-2331800, e-mail : appranchi.1969@gmail.com

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण

(आत्मा) रामगढ़

E-mail : atmaramgarh@gmail.com

परियोजना निदेशक : **आत्मा, रामगढ़** उपायुक्त सह अध्यक्ष : **आत्मा, रामगढ़**